हिन्दी - विभाग
डॉ० कविता कुमारी सिंह

B.A. Part I

विषय — सूफी काव्य का शेष - भाग

कबीर ने हिन्दुओं के बाह्य विधि विधानों का खण्डन किया। उनका एकमात्र उद्देश्य हिन्दू और मुसलमानों में शुद्ध सात्विक भारतीय धर्म का प्रचार करना था। कबीर ने दोनों धर्मों के बाह्य आडम्बर को खण्डन किया — "कांकर पाथर जोरि कै, मास्जिद लियौ बनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, बहरा हुआ खुदाय।"

और भी — "रोजा तुर्क नमाज गुजारे, बिसमिल बांग पुकारे।
ताके भिसत कहाँ ते होये, सांझे मुर्गी मारे।"

कबीर का एकमात्र उद्देश्य था हिन्दू और मुसलमानों में भारतीय धर्म का प्रचार करना - शुद्ध भारतीय होने के लिए बाधित किया। का उद्देश्य प्रभु - भक्ति का प्रचार न करके स सुधार या हिन्दू - मुस्लिम ऐक्य को (नारा) व

Too many of us are not living our dreams because we are living our fears. – Les Brown

उन्होंने अपने पुराने दशरथी राम को नवीन, निर्गुण निर्विकार का रूप दे दिया किन्तु उनका नाम राम, गोविन्द, हरि ही रहने दिया। उन्होंने निम्न वर्ग की जनता को सत्य, अहिंसा, सदाचार एवं संतोष आदि का पाठ पढ़ाकर उन्हें उन्नत बनाने का प्रयास किया। मुसलमानों पर उनका सहसा प्रभाव पड़ना तो बहुत असंभव था, परन्तु धीरे-धीरे उनका प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता गया। कबीर की प्रेरणा प्राप्त कर जायसी, रहीम, रसखान आदि भी भारतीय रंग में रंग गये। इस प्रकार कबीर द्वारा बोया हुआ बीज आगे चलकर जायसी के रूप में अंकुरित हुआ। जायसी ने कबीर की रही-सही कमी को प्रेम की पीर के आधार पर सम्पन्न किया। जायसी ने अपनी प्रेममयी मधुर-वाणी भी को ऐसा प्लावित किया कि जिसका प्रभाव युग-युगान्तर तक भी दूर नहीं हो सकता था।

मानव मात्र के कल्याण के लिए प्रेम-रूपी संजीवनी बूटी का रूप जायसी ने प्रदान

यद्यपि कबीर ने अपनी प्रेम-भक्तिमयी वाणी के द्वारा हिन्दू-मुसलमानों के आंतरिक वैमनस्य को दूर किया, तथापि कुछ प्रच्छन्न फकीर ऐसे थे, जिनका एकमात्र उद्देश्य इस्लाम का प्रचार करना था। वे अपने आडम्बर-पूर्ण आचरण से लोगों को मोहित कर उन्हें अपने वश करते और उनकी अंधभक्ति को बढ़ाते थे। उच्च वर्ग तो उनकी दाल नहीं गलती थी, किन्तु वे तथाकथित निम्न वर्ग को अधिक प्रभावित करते थे। इस प्रकार प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में सूफी-साधुओं ने जनता पर अधिकार जमाया।

विदेशी सत्ता से अधिकृत हो जाने से हिन्दुओं संस्कृति और शिक्षा का प्रसार नहीं रह गया था। लुक छिपकर कुछ मंदिरों में पूजा आदि अवश्य करते। शास्त्र आदि करते, परन्तु सामान्य जनता इन बातों से दूर जाती थी। इस प्रकार धर्मध्वजों के पतन के कारण को ऊँचा करने का अवसर मिलता था। कुछ त्यागी अवश्य रह गये थे परन्तु उनका प्रभाव प्रतिदिन कम होता गया।

जैसे ही इधर राजशक्ति की

Appointments

ने भारतीय जन-समाज को छिन्न-भिन्न कर दिया, वैसे ही दूसरी ओर धर्म की इस नई धारणा ने साधारण लोगों को लुभाकर चिरकाल से प्रतिष्ठित आदर्शों विश्वासों और सिद्धान्तों पर प्रहार किया। जो लोग देश की विचार, संस्कृति और एकता के मूल में युग-युग से जीवन देकर हरा-भरा करते, उनकी हँसी उड़ायी जाती। अतः समाज की नींवें खोखली होती गई। ऐसी स्थिति में जिस साहित्य की आवश्यकता थी, सूफी कवियों ने उसकी कमी पूरी की। इस्लाम धर्म का प्रचार अधिकतर तलवार के बल पर हुआ, परन्तु सूफी का प्रचार बल-प्रयोग की अपेक्षा चमत्कारपूर्ण चे से हुआ। मुसलमानों का एक दल ऐसा भी था, हिन्दू धर्म के प्रति उदार ही नहीं, वरन् उसपर आ भी रखता था। इस प्रकार जहाँ वे सूफी धर्म के की भावना में विश्वास रखते, वहाँ दूसरी ओ हिन्दू-धर्म के आदर्शों को सौजन्य की दृष्टि से अतः इसी भावना के कारण प्रेमकाव्य की रचना र देश में शांति-प्रेम के बीज बोकर सुन्दर सा सृजन किया।

Sunday

M T W T F S S M T W T